हिंदी प्रदेशों में भ्रमण

HIN-527

श्रेयांक: 2

स्नातकोत्तर कला (हिंदी)

सलोनी नाईक

अनुक्रमांक **23P0140024**

PR Number: **202003162**

शणै गोंयबाब भाषा और साहित्य संकाय

हिंदी अध्ययन शाखा

गोवा विश्वविद्यालय

अप्रैल 2024

3/05/24

16/20

परीक्षक:

GOA UNIVERSITY
TALEIGAO PLATEAU GOA

दिल्ली की यादों का सिलसिला

दिल्ली की कई सारी खुशनुमा यादें आज भी मेरी दिल में कैद हैं। दिल्ली जाने से पहले तक तो मन में कई सारे सवाल थे कि क्या मैं वहा अकेले रह सकूंगी? या वहा का वातावरण कैसा होगा और साथ ही दिल्ली के बारे में कई सारी उडती हुई बातें भी सुनी थी जिससे मन में एक डर सा भी बना हुआ था। आज बिल्कुल भिन्न तस्वीर दिल्ली की मेरे मन में बन चुकी हैं और वहा से लौटते वक्त हमे कई सारी यादों का खजाना वहा से प्राप्त हो गया।

१८ मार्च २०२४,सोमवार को शाम के २.३० बजे हम मडगांव स्टेशन पर मिले। पहुंचाएगी सबसे पहले तो सर के पास हाजिरी लगाकर मैं सीधे अपने दोस्तों के साथ पास गई और हमारे परिवारजनों में भी जान पहचान बनी। मेरे साथ माँ, मौसी,मामाजी और उनके शैतान बच्चे भी आए हुए थे। ट्रेन कुछ समय देरी से होने के कारण हमें काफी देर तक स्टेशन पर इंतजार करना पड़ा पर बच्चों को संभालते हुए और स्टेशन पर फोटो लेते हुए वक्त मजे से कट गया। ट्रेन के पहुंचते ही सब लोग ऊपर चढने के लिए कसरत करने लगे और हम भीड में से राह बनाते हुए जल्दी से समान के साथ अंदर जाकर अपनी जगहों पर बैठ गए और देखते ही देखते ट्रेन चल पड़ी। ट्रेन में पहला ही दिन होने से हम सब अपनी जगहों पर बैठ गए और बाहर के नजारों का मजा लेने लगे साथ में हँसी मजाक और हमने कार्ड्स के खेल का भी मजा लिया। इसके बाद सबने खाना खाया और फिर से खेल खेलने में, तो कुछ बाते करने में ,तो कुछ अपनी ही धुन में मस्त थे। स्टेशन से छूटते हुए पहले तो काफी धीमी रफ्तार से धीरे धीरे तेज़ी पकडती हुई हमारी ट्रेन यात्रा की शुरुआत हो गई। ट्रेन से बाहर का नजारा बहुत मजेदार था और हमने आगे गोवा के प्रसिद्ध दूधसागर झरने का भी दर्शन किया। पहला दिन यू ही निकल गया और रात के १०.००बजे मैं सोने चली गई। मुझे ट्रेन में सबसे ऊपर वाली सीट मिली थी जिस कारण ऊपर से नीचे लोगों को आते जाते देखने में भी बडा मजा आता था। चलती हुई रेल में सोने का भी अपना अलग मजा है हालाँकि उतनी आरामदायक भी नहीं था !

दूसरे दिन १९ मार्च को हमारी रेल यात्रा का दूसरा दिन था। सुबह ८.००बजे मेरी नींद खुली । हम सब उठकर चाय नाश्ता करके फिर से गप्पे लडाते, मजे से गाते खेलते हुए समय काटने लगे। रह-रहकर ट्रेन में कई सारे लोग चढते उतरते रहे साथ में कुछ लोग खाने के या खिलौने,कंगन तथा अन्य श्रृंगार का समान बेचने चले आते थे और ट्रेन के अगले स्टेशन पर रुकते ही वे उतर जाते। यूं ही कुछ सोते कुछ जागते हम सब मंजिल के इंतजार में थे। दोपहर के खाने के बाद सब तरफ सन्नाटा सा छा गया और सफर भी कुछ लंबा लगने लगा। इस सब में ,अकडे हुए बदन जैसे हमारे सब्र का इम्तिहान ले रहे हो पर इन सब के बावजूद यह रोमांचक सफर जारी रहा और अगले दिन २०तारीख को करीब सुबह ६.१० को हम दिल्ली में दाखिल हुए और९वहा मैने पहली बार मेट्रो के सफर का आनंद लिया। मेट्रो से हम करीब ९.00 बजे नई दिल्ली,रेल्वेस्टेशन पर उतरे जहा हम रिक्शा में बैठकर सीधे होटल के लिए रवाना हुए। स्टेशन से भारी सामान खींचते हुए होटल तक पहुंचने में सबकी बुरी हालत थी। प्रवास की थकान होटल में कुछ देर आराम लेने से दूर हुई। होटल पहुंचते ही मुझे,सेजल और साईली को एक ही कमरा मिल गया और हम सीधे कमरे में जाकर तैयार होकर और कुछ देर आराम करने

के बाद सीधे अक्षरधाम निकल पडे । वही पर हमने नाश्ता किया और आगे बढ गए। यह स्वामी नारायणदास का धाम था जहा हमने पूरा दिन बिताया। स्वामीनारायण,अक्षरधाम मन्दिर एक अनोखा सांस्कृतिक तीर्थ है। इसे ज्योतिर्धर भगवान स्वामिनारायण की पुण्य स्मृति में बनवाया गया है। इसके मुख्य देव भगवान स्वामीनारायण है। यह दुनिया का सबसे विशाल हिंदू मन्दिर परिसर है। अक्षरधाम मन्दिर को गुलाबी, सफेद संगमरमर और बलुआ पत्थरों के मिश्रण से बनाया गया है। इस मंदिर को बनाने में स्टील, लोहे और कंक्रीट का इस्तेमाल नहीं किया गया। मंदिर को बनाने में लगभग पांच साल का समय लगा था। मंदिर में अंदर जाने के लिए कुछ विशेष नियम भी बने हैं। प्रवेश करने के लिए ड्रेस कोड भी बना है। आपके कपड़े कंधे और घुटने तक ढके होने चाहिए। क्योंकि वस्त्र भी संस्कार व संस्कृति के परिचायक होते हैं। शाम ७.३० बजे वहा से निकले और मेट्रो से सीधे वापिस होटल पहुंच गए जहा से पास ही के होटल मे रात का खाना खाने के बाद हम सर के साथ वापस होटल पहुंच गए और सीधे सोने चले गए। थकावट के कारण हमें नींद भी अच्छी आ गई।

अगले दिन २१को सुबह ७.०० बजे उठकर हम सब नहा धोकर तयार हुए। हमारे कमरे में गर्म पानी की दिक्कत होने के कारण हम समय पर नाश्ता करने नहीं पहुंच पाए और सब सीधे बस यात्रा पर निकल पडे। आज का दिन बडा रोमांचक होने वाला था। हमारी बस अशोक रोड से होकर गुजरी जहा पर अंधरा प्रदेश भवन तथा कई सारे भवन और भारत के कई बडे नेताओं के घर भी थे। इसके बाद हम सीधे इंडियागेट पहुंच कर रुके। जहा पर हमने कई अन्य स्मारक भी देखे और साथ ही वहा के और साथ ही वहा के संग्रहालय का भी दर्शन किया जो कारगिल जैसे युद्ध में वीरगति प्राप्त सैनिकों की याद में बनाया गया है। यहा जवानों की पुरानी वर्दियों से बनाई हुई वस्तुए जैसे, टोपी, बटुए, झोला आदि बेची जा रही थी। इंडियागेट स्वतन्त्र भारत का राष्ट्रीय स्मारक है, जिसे पूर्व में किंग्सवे कहा जाता था। मूल रूप से अखिल भारतीय युद्ध स्मारक के रूप में जाने वाले इस स्मारक का निर्माण शाही नेपाल सरकार द्वारा उन ९०००० भारतीय सैनिकों की स्मृति में किया गया था जो ब्रिटिश सेना में भर्ती होकर प्रथम विश्वयुद्ध और अफ़ग़ान युद्धों में शहीद हुए थे। यूनाइटेड किंगडम के कुछ सैनिकों और अधिकारियों सहित 13,300 सैनिकों के नाम, गेट पर उत्कीर्ण हैं। लाल और पीले बलुआ पत्थरों से बना हुआ यह स्मारक दर्शनीय है।

INDIA

स्मारिका
SMARIKA
SOUVENIR OUTLET
ASHA • WISHWAS • AASTHA

New Delhi, Delhi, India
35, Copernicus Marg, New Delhi, Delhi 110001, India
Lat 28.624416° Long 77.230277°
21/03/24 12:54 PM GMT +05:30
Photo Credits : Aditya Sinai Bhangui
221 m
145° SE
Google

सुबह करीब ११.४०बजे हम ललित कला अकादमी के साहित्य पुस्तकालय पहुंचे जहा, कई सारी प्राचीन किताबे थी तथा हिंदी की कई मूल्यवान प्राचीन किताबे भी बडी तिजोरियों में संभालकर रखी गई थी। यहा हर एक किताब उपलब्ध थी,हर भाषा की समृद्धि यहा थी। किताबों के साथ साथ यहा पर की पत्रिकाएँ तथा नाटक पत्रिकाएँ भी थी जैसे:- समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिका, योगा सुधा नात्रिग : नुक्कड नाटक विशेषांक , संगीतिका(a reviewed journal by Ragini Basant on Indian Music) यहा पर कीताबे बेची भी जा रही थी जहा से मैने कविताओं की किताब भी खरीदी। वहा के अन्य कमरो में कला और संगीत संग्रहालय(art and music museum) भी था। वहा हमने कई प्रकार के संगीत वाद्य, कलाकृतियाँ , चित्रकारी देखी और उनके बारे में अधिक जानकारी भी प्राप्त की। संगीत नाट्य अकादमी का मुख्य उद्देश्य लुप्त होती कला का संरक्षण करना था। यहा से हम १.२५को सधे भोजन करने निकल पडे।

शाम के ३.०० बजे हम लोटस टेंपल पहुंचे। सबसे पहले तो हमने कुछ खाना पीना किया और मंदिरमें दाखिल हुए। कमल मंदिर बहाई उपासना मंदिर है। यह अपने सौंदर्य तथा अनोखे कलाकृती के लिए प्रसिद्ध हैं। यहा पर न ही कोई धार्मिक ग्रंथ है न ही कोई देवी देवता। यह शांती एवं सर्व धर्म समभाव का उत्तम प्रतीक है। यहाँ पर विभिन्न धर्मों से संबंधित विभिन्न पवित्र लेख पढ़े जाते हैं। भारत के लोगों के लिए कमल का फूल पवित्रता तथा शांति का प्रतीक होने के साथ ईश्वर के अवतार का संकेत चिह्न भी है। यहा हर धर्म का सम्मान एवं शांती पूर्वक स्मरण होता है। यहाँ का शांत वातावरण प्रार्थना और ध्यान के लिए सहायक है ।यहा कोई मूर्तिपूजा की प्रवृत्ती नहीं मिलती है तथा अंदर से तस्वीरें खींचने पर भी पाबंदी थी। इसके बाद हम सीधे हुमायू के मकबरे पर गए। जहा की समाधिया देखी और फिर हम सब लाल किले पर बहुत देर तक घूमें। शाम के ६.३० बजे वहा से रवाना हुए और बाहर से ही राष्ट्रपति भवन देखा

रात को हमें श्री लक्ष्मीनारायण बिरला मंदीर के भव्य दर्शन भी प्राप्त हुएयह बहुत सुंदर मंदिर था जिसमें लक्ष्मीनारायण के साथ शिव शक्ति,राम सिया, हनुमान जी,तथा गणेश जी की भी पूजा की जाती है। भगवान विष्णु और देवी लक्ष्मी को समर्पित यह मंदिर दिल्ली के प्रमुख मंदिरों में से एक है। इसका उद्घाटन राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने किया था। बिड़ला मंदिर अपने यहाँ मनाई जाने वाली जन्माष्टमी के लिए भी प्रसिद्ध है। इसके वास्तुशिल्प की बात की जाए तो यह मंदिर उड़ियन शैली में निर्मित है।

मंदिर का बाहरी हिस्सा सफेद संगमरमर और लाल बलुआपत्थर से बना है जो मुगल शैली की याद दिलाता है।

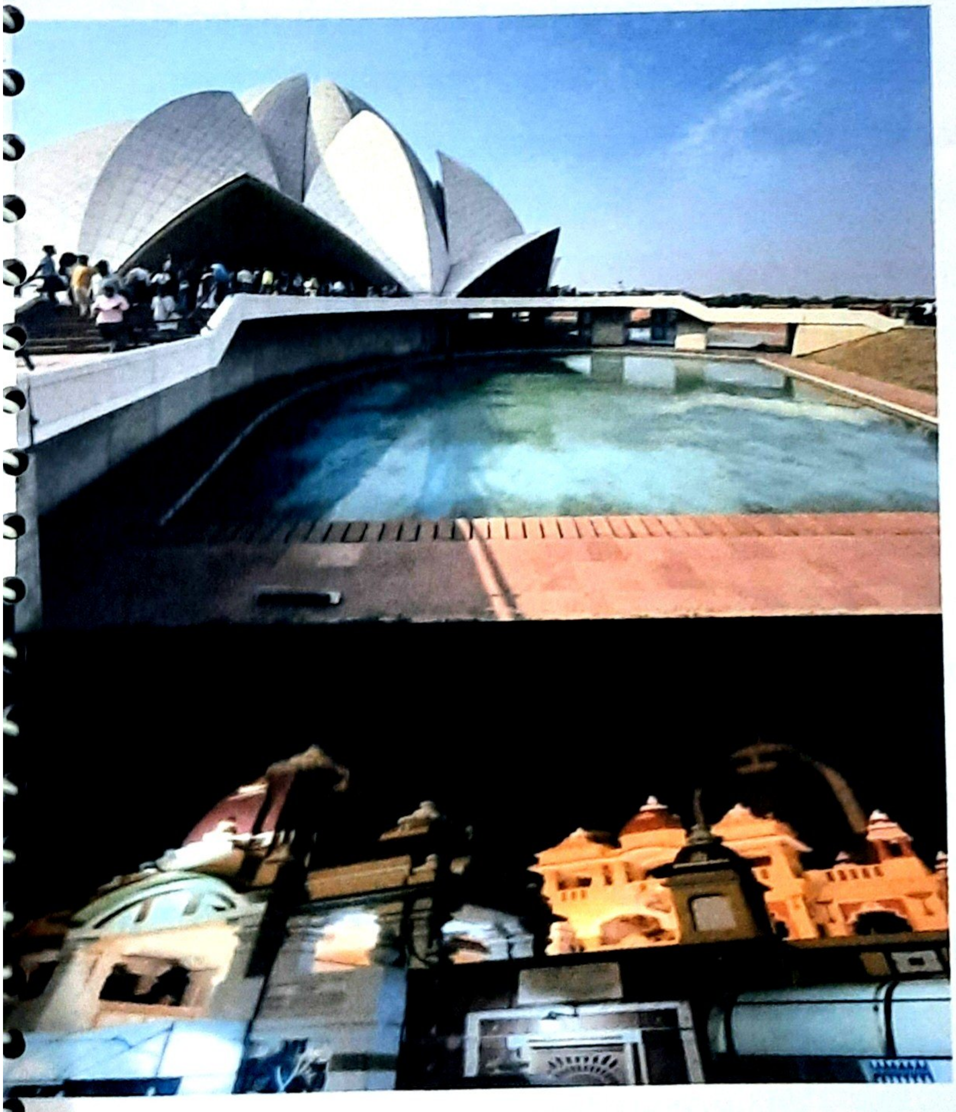

यह मंदिर मूल रूप में १६२२ में वीर सिंह देव ने बनवाया था, उसके बाद पृथ्वी सिंह ने १७९३ में इसका जीर्णोद्धार कराया। सन १९३८ में भारत के बड़े औद्योगिक परिवार, बिड़ला समूह ने इसका विस्तार और पुनरोद्धार कराया। मुख्य बरामदे में लक्ष्मी नारायण की भव्य मूर्ति स्थापित है। साथ ही मंदिर परिसर में भगवान शिव और भगवान श्रीकृष्ण के मंदिर भी स्थित हैं। इसके बाद हम वापस होटल आए और आराम किया।

२२मार्च को सुबह जल्दी उठकर ,तयार होकर ९.००बजे हमने नाश्ता किया और हमारा बस का प्रवास शुरू हो गया,आज पूरे दिन दिल्ली की अनेक युनिवर्सिटी घूमने का प्लेन बना था।बस से बाहर का नजारा भी दिलचस्प था। होटल से सीधे १०.४० को हम दिल्ली युनिवर्सिटी पहुचे। होली का त्योहार होने से वहा पर छुट्टियां चल रही थी। दिल्ली में होली के त्योहार पर भी उन्हे हफ्ते भर की छुट्टी होती है पर यह कारण भी हमें युनिवर्सिटी को अंदर से देखने से नहीं रोक पाया। उनकी खास इजाजत लेकर हम सब अंदर दाखिल हो ही गए और हिंदी विभाग का खास निरीक्षण भी कर लिया। वहा पर हफ्ते में केवल २ही दिन पढ़ाई होती थी, उनके यहा आंदोलन जारी थे जिस कारण भी कॉलेज में कोई विद्यार्थी नहीं था। इसकी स्थापना 1922 में केंद्रीय विधान सभा के एक अधिनियम द्वारा की गई थी और इसे विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा एक उत्कृष्ट संस्थान (आईओई) के रूप में मान्यता प्राप्त है। विश्वविद्यालय के उत्तरी और दक्षिणी परिसरों में 16 संकाय और 86 विभाग हैं, और शेष कॉलेज पूरे क्षेत्र में हैं। इसमें 91 घटक कॉलेज हैं। दिल्ली विश्वविद्यालय दुनिया की सबसे बड़ी विश्वविद्यालय प्रणालियों में से एक है ।इसके बाद हम सब सीधे चलकर पास ही में स्थित हिंदु कॉलेज देखने गए जो वही बिल्कुल पास में ही स्थित था। यह १५० साल पुराना कालेज था जिसमें सबसे पहला विभाग 'हिंदी विभाग'ही था। इनकी अपनी की सारी संस्थान भी है जैसे 'अभिरंग संस्था' जो इनकी नाटक और रंगमंचीय संस्था है। इनकी लहर और अभिव्यक्ति नाम की अपनी पत्रिकाए भी है जो विद्यार्थीयों द्वारा चलायी जाती हैं। साथ ही यहा मेक्का नाम से वार्षिक उत्सव का भी आयोजन होता है जो पूर्णतः उनके छात्रों द्वारा ही आयोजित होता हैं। यहा अलग से स्टाफ और शिष्यों के इलेक्शन भी होते है और स्टाफ इलेक्शन तो जारी भी था। साथ ही कॉलेज में रिलेक्सो रिसर्च सेंटर भी है जहा बच्चे अपनी कलाकारी का प्रदर्शन कर सके ,जहा विज्ञान के छात्र अपने प्रयोग करते हैं। इनके अलुमनी में कई बडे प्रसिद्ध हस्तियाँ जो अक्सर वहा पर कार्यक्रमों में उपस्थित भी रहते है। उनकी पूरी दीवार उनकी तस्वीरों से भरी हुई है। इसका यह नाम किसी धर्म विशेष से नहीं पडा है , हिंदू कॉलेज की स्थापना 1899 में ब्रिटिश राज के खिलाफ राष्ट्रवादी संघर्ष की पृष्ठभूमि में कृष्ण

दासजी गुरवाले और पंडित दीन दयाल शर्मा द्वारा की गई थी। 1922 में दिल्ली विश्वविद्यालय का जन्म हुआ, तब रमसन कॉलेज और सेंट स्टीफंस कॉलेज के साथ हिंदू कॉलेज को दिल्ली विश्वविद्यालय से संबद्ध कर दिया गया , जिससे वे विश्वविद्यालय के साथ संबद्ध होने वाले पहले तीन संस्थान बन गए। हिंदू कॉलेज भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, विशेषकर भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बौद्धिक और राजनीतिक बहस का केंद्र था। यह दिल्ली का एकमात्र कॉलेज है जहां 1935 से छात्र संसद चल रही है, जिसने महात्मा गांधी , मोतीलाल नेहरू , जवाहरलाल नेहरू , सरोजिनी नायडू , एनी बेसेंट , मुहम्मद अली जिन्ना और सुभाष

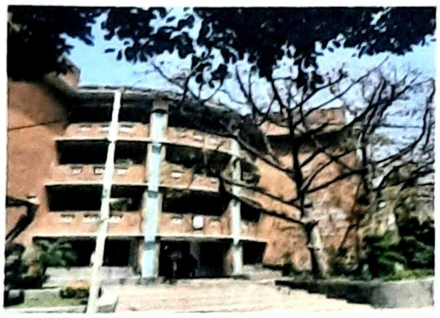

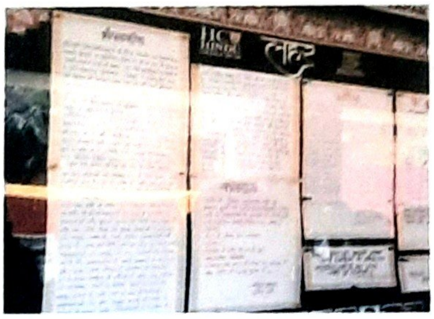

चंद्र बोस सहित कई राष्ट्रीय नेताओं को प्रेरित करने के लिए एक मंच प्रदान किया। 1942 में गांधीजी के भारत छोड़ो आंदोलन के जवाब में , कॉलेज ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। २.०० बजे जवाहरलाल नेहरू यूनिवर्सिटी पहुंचे (JNU)। यहा पर डा ॅ.अंबेडकर नेशनल पुस्तकालय देखा। इसकी स्थापना 1969 में हुई थी और इसका नाम भारत के पहले प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के नाम पर रखा गया था। विश्वविद्यालय सामाजिक विज्ञान और अनुप्रयुक्त विज्ञान पर अग्रणी संकलनों और अनुसंधान पर जोर देने के लिए जाना जाता है। वहा काफी समय बिताने के बाद हम सीधे बस में बैठकर कुतुबमीनार की ओर चल पडे और ६.१० बजे वहा पर पहुच भी गए। यहा कुतुबमीनार को देखकर, तस्वीरे आदि खींचकर हम करीब ७.०० बजे बस में बैठकर वहा से निकले।

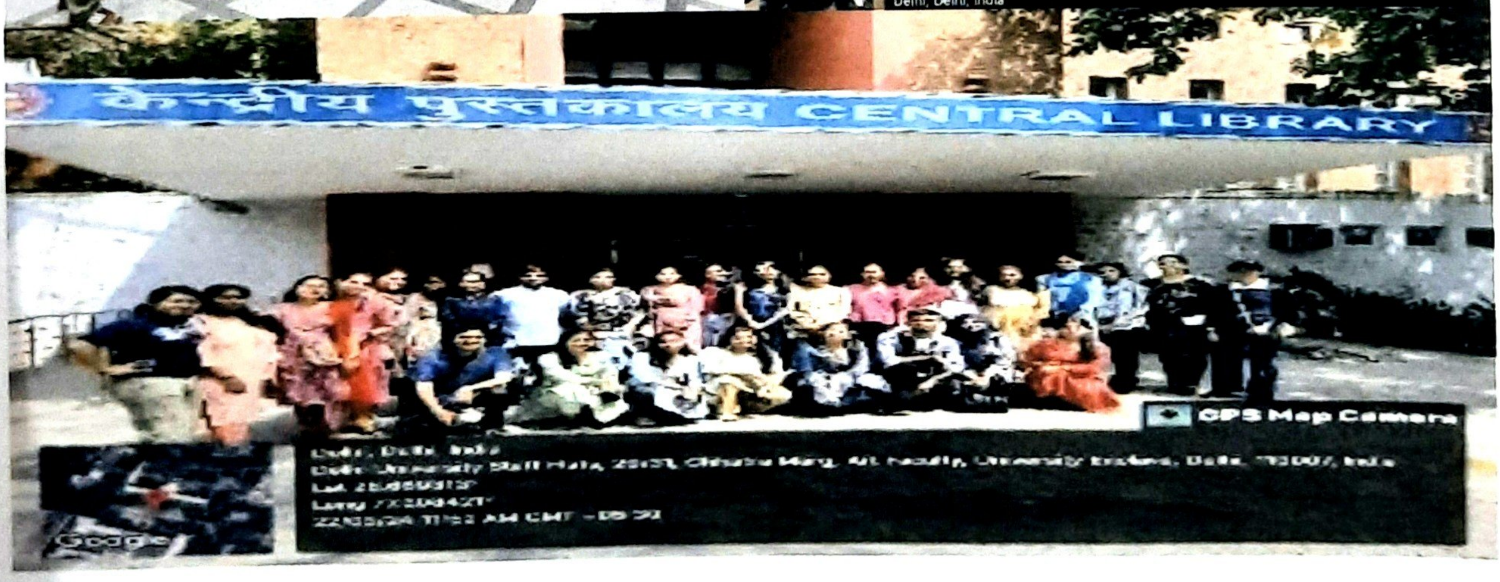

कुतुब-उद-दीन ऐबक और शमसुद-दीन इल्तुनमिश ने 1199 और 1503 के बीच कुव्वतुल-इस्लाम के दक्षिण-पूर्वी कोने पर एक मीनार (मीनार) का निर्माण किया। मीनार कुतुब परिसर के कई ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण स्मारकों से घिरा हुआ है। मीनार के उत्तर-पूर्व में स्थित कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद का निर्माण कुतुब-उद-दीन ऐबक ने 1199 ई. में करवाया था। यह दिल्ली के सुल्तानों द्वारा निर्मित सबसे पुरानी मस्जिद है। प्रांगण में लौह स्तंभ पर चौथी शताब्दी ईस्वी की ब्राह्मी लिपि में संस्कृत में एक शिलालेख है, जिसके अनुसार स्तंभ को चंद्र नामक एक शक्तिशाली राजा की याद में विष्णुपद के नाम से जानी जाने वाली पहाड़ी पर विष्णुध्वज

(भगवान विष्णु का मानक) के रूप में स्थापित किया गया था। दोपहर के समय तो यह और भी मोहक लगता है जब इसकी चारो ओर बत्तियाँ जला दी जाती है।

बस में सफर करते हुए ही हमने बाहर से ही चानक्य नौसेना कार्यालय (नेवी आफिस) भी देखा।इसके बाद हम सीधे वापिस होटल पहुंच गए और सीधे कमरे में जाकर आराम किया।

२३ मार्च को हम सब सुबह ४.००बजे उठे और तयार होकर नीचे हॉटेल लोबी में मिले। नींद पूरी न होने के कारण सभी बस में बैठते ही वापिस सो गए थे। हम सुबह ६.३० बजे वृंदावन धाम पहुंच गए। ७.३०तक हम सबने वहीं ढाबे पर नाश्ता किया और बस सीधे ताज महल की ओर निकल पडी। १०.३०को हम ताज पहुंच गए।

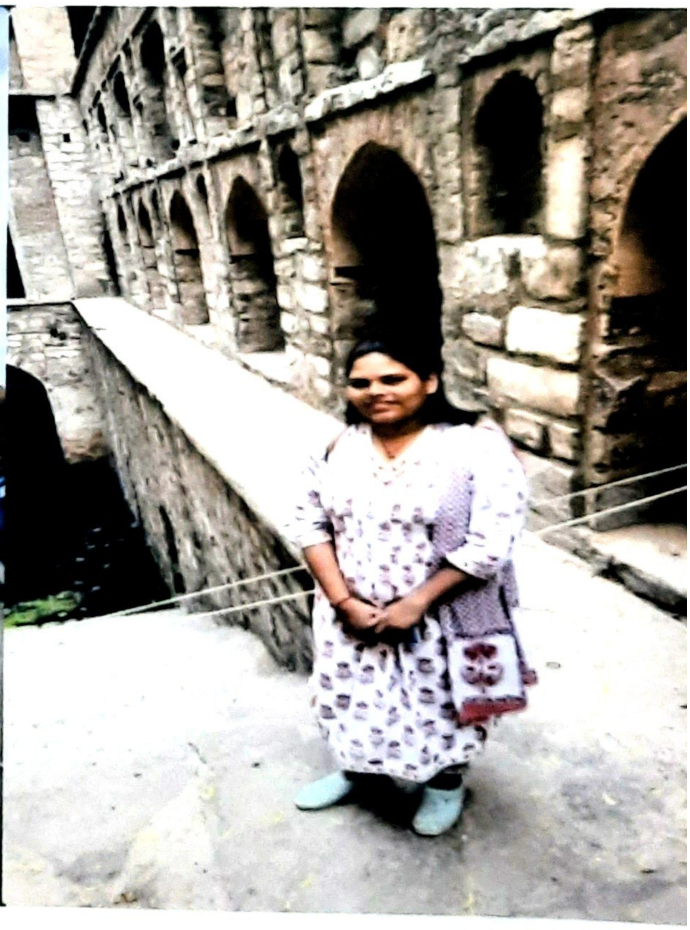

११.00 बजे तक सब टिकट लेकर हम अंदर दाखिल हुए। वहा की इलेक्ट्रिकल वाहन का सफर बडा रोचक रहा जिसके बाद हम अंदर पहुंच गए। वहा काफी सारी छोटी-मोटी दुकाने भी थी। अंदर काफी सक्त जांच चल रही थी जहा मैं गलती से कोल्ड्रिंक की बोतल ले गई जो उन्होंने जप्त कर ली थी जिससे सच में मन को बडी चोट लगी। वहा पानी के अलावा कोई अन्य पदार्थ ले जाना वर्जित था। हमने वहा गाईड लिया जिससे हमें इसको अच्छे से जानने और देखने का भी मौका मिल सके। इसको बनाने की शुरुआत १८६२में हुई थी , जिस दरवाजे से हम दाखिल हुए, वह पूर्वी द्वार था जो केवल खास वि.आई.पी लोगों के लिए था और इसके दक्षिण दिशा में स्थित दरवाजा केवल

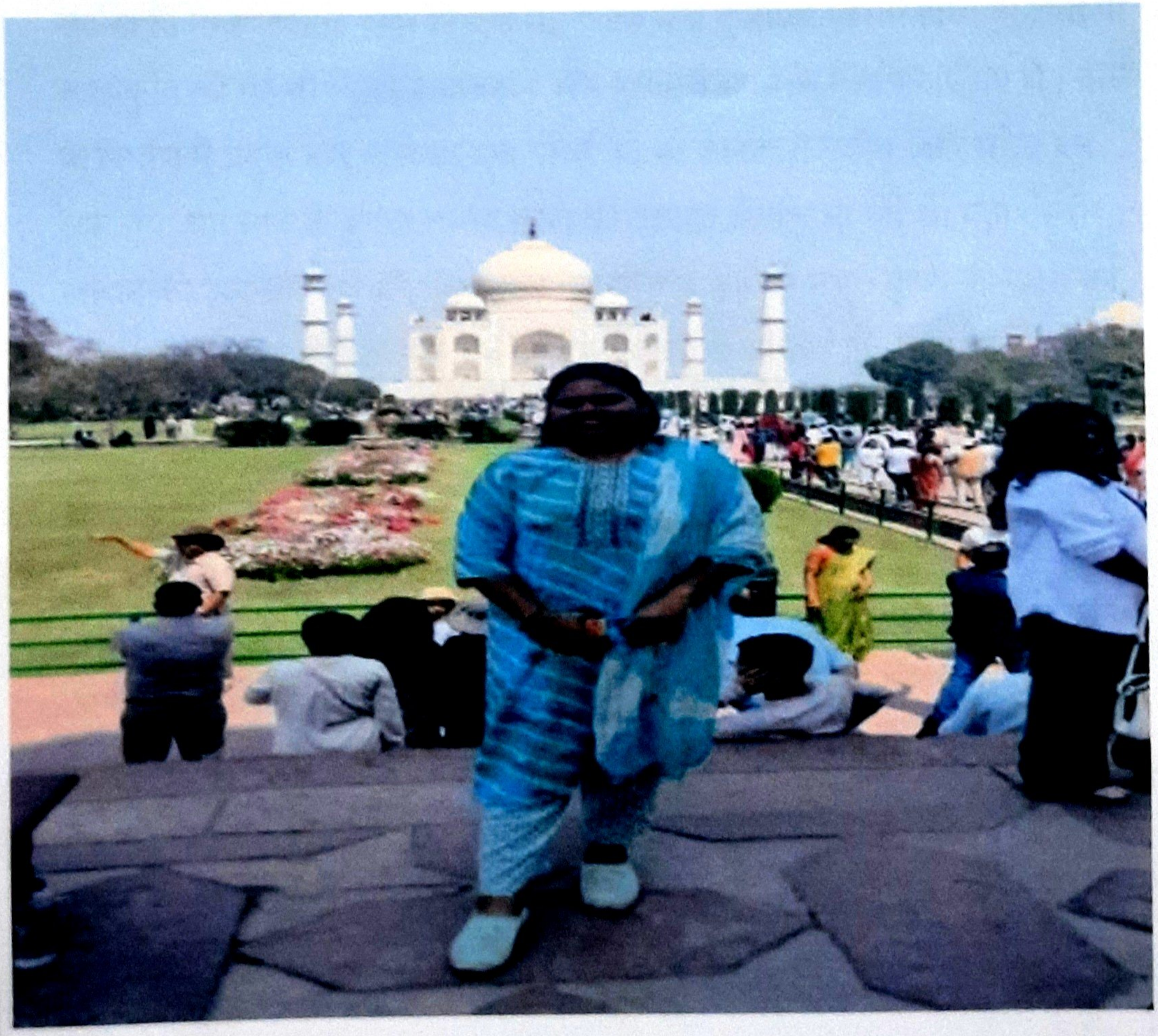

बाहर जाने के लिए प्रयुक्त होता हैं। इसमें पूरा सिमेट्रकल डिजाइन बना हुआ था और चारों तरफ सफेद डोम्स बने हुए थे जो ११आगे की तरफ और ११पीछे थे। इसे पूरे २२ साल लगे पूरा होने में जिसके प्रतीक स्वरूप ऊपर के १२डोम्स बने है। १६३१-१६४० का समय इसे बनाने में लगा था। इसके काले पत्थर खास बेल्जियम से तो लाल पत्थर राजस्थान से लाए गए थे। यह हर शुक्रवार को बंद रहता है,इस वक्त यहा स्थानीय लोग नमाज पढने आते हैं। इसमें उपस्थित पत्थर रात को चमकते है जो एक दूरी से ही देखा जा सकता हैं। ताजमहल एक ही मध्य लकीर से जुडा हुआ है अत: चारों दिशाओं से देखने पर भी यह एक समान ही लगता हैं। इसके अंदर रानी मुमताज महल की समाधी भी है। हर साल यहा ३दिनों का त्योहार मनाते है जब यहा कोई भी निशुल्क प्रवेश कर सकता हैं। ताजमहल के अंदर ही एक संग्रहालय बना हुआ था जिसमे हाथी के दांतों पर कलाकृति की गई थी जिनपे शाहजहान और मुमताज बेगम के चित्र बनाए गए थे । ताज के निर्माण में प्रयुक्त होने वाले हर एक पत्थर को भी जानकारी सहीत अंदर सहेज कर रखा गया था। साथ ही मुगल शासन काल की तलवार,सिक्के भी रखे थे। यहा तस्वीर खींचने की अनुमती नहीं थी। इसके बाद हम सीधे ४.३० को मथुरा कृष्ण की नगरी का दर्शन करने निकल पडे। ठीक ५.३५ को हम वृंदावन में दाखिल हुए। जहा हमने प्रेम मंदिर, कीर्ती मंदिर और भक्ति मंदिर के दर्शन प्राप्त किए। होली के शुभ दिन पर ही यह सुअवसर हमें प्राप्त हुआ। ६.00 बजे हम मंदिर के प्रांगण में पहुंच गए। वहा कई सारी गौशालाए थी। यहा मंदिर में दर्शन के बाद हम ९.00 बजे तक वही पर थे जहा से कुछ खरीदारी भी हमने की थी। मथुरा के भव्य मंदिर में कृष्ण के समक्ष माथा टेका ,यहा की दिव्य आरती का भी लाभ हमें प्राप्त हुआ और होली के त्योहार के दिन ही वहा पहुचने से हमें मथुरा की होली का आनंद एवं अनुभव भी प्राप्त हुआ। साथ ही हमने वहा कृष्ण के जन्म स्थान कारावास भी देखा जिसमें कृष्ण की बाल प्रतीमा पूजी जाती हैं जहा की

आरती भी हमें मिली। इसे जन्मभूमि नाम से भी प्रसिद्धि प्राप्त हैं।हमें कारावास के अंदर से गुजरने का भी मौका मिला। यह एक विवादित स्थल होने से और भी अधिक प्रसिद्ध

है। वही पर कुछ तस्वीर खींचकर हम वापस बस में बैठकर गए। ९.००बजे हम सीधे वृंदावन निकल गए। वृंदावन में लोगों का जानवरों से खास लगाव देखने मिला। खास तौर पर गाय से। हर घर के बाहर, रस्तों पर ये बेफिक्र घूमती मिली। रात को हमने बाके बिहारी के दर्शन किए और रात के करीब ४.००बजे हम वापस होटल पहुंच गए।

२४ मार्च को सुबह ९.00 बजे तक सब इकट्ठे हो गए और १०बजे हम सब अग्रसेन की बावली पर पहुंच गए जो कई सारी फिल्मों में भी दिखाई देती है। वहा तस्वीर खींची। अग्रसेन की बावली, एक संरक्षित पुरातात्विक स्थल हैं जो नई दिल्ली में कनॉट प्लेस के पास स्थित है। इस बावड़ी में सीढ़ीनुमा कुएं में करीब 105 सीढ़ीयां हैं। 14वीं शताब्दी में महाराजा अग्रसेन ने इसे बनाया था। सन 2012 में भारतीय डाक अग्रसेन की बावड़ी

पर डाक टिकट जारी किया गया। इस बावड़ी का निर्माण लाल बलुए पत्थर से हुआ है। अनगढ़ तथा गढ़े हुए पत्थर से निर्मित यह दिल्ली की बेहतरीन बावलियों में से एक है। अग्रसेन की बावली दिल्ली का एक लोकप्रिय ऐतिहासिक इमारतों में से एक है। बाद में हम वहा से निकल कर राष्ट्रीय बालभवन गए जहा हमने तरह तरह के आईने देखे और तरह तरह के पंछी भी वहा पर पाले गए थे तथा खिलौने की बडी सी रेल भी वहा पर थी जिसमे बच्चों को बिठाकर सैर कराते थे।

राष्ट्रीय बालभवन एक ऐसा संस्थान है जो बच्चों को उनकी आयु ,रूचि एवं योग्यता के अनुसार विविध कार्य कलापों के आयोजन द्वारा विविध अवसर तथा विचार विमर्श करने ,सृजन करने तथा प्रदर्षन के लिए साझा मंच उपलब्ध करवाकर उनकी सृजनात्मक प्रतिभा को तलाशता है। यह बच्चों को किसी भी तनाव या दबाव से मुक्त, नई चीजे सीखने के लिए असीमित अवसरों सहित निर्बाधउन्मुक्त वातावरण उपलब्ध कराता है।

पूरा घूमने के बाद हम करीब ११.००बजे वहा से बाहर निकले और वही स्ट्रीट पर छोले पराठे खाए और वापस से बस सफर चालू हो गया। इसके बाद १२ बजे हम सीधे राजगढ़ गांधी के समाधी स्थान पर पहुंच गए। १९६५में यह गांधी स्मारक बनाया गया था। इसका मुख्य नारा था- 'मेरा जीवन ही मेरा संघर्ष है' यह गांधी की याद में बनाया गया था जिसकी देखभाल उन्ही के वंशज करते है। गांधी के घर का प्रतिरूप (मा ॅडल)भी यहा पर है। नमक सत्याग्रह के विषय में भी हमें यहा से जानकारी प्राप्त हुई। जब गाय भैंसों की पाचन शक्ति कमजोर हुई तब लोगों को नमक की जरूरत जान पडी और यह उल्झन सुल्झाने हेतु गांधी ने साबरमती से दांडी तक यात्रा कर नमक आंदोलन किया था। उनके घर का एक मा ॅडल यहा पर है और साथ ही उनके द्वारा प्रयुक्त बैठक को भी उन्होंने गांधी की याद में सहेज के रखा हैं जिसे देखने का मौका हमें मिला। साथ ही वहा पर गांधी द्वारा देखे गए सिनेमा यंत्र बायोस्कोप भी रखा था । उनके संपूर्ण जीवन की झलक यहा से पाकर हम सीधे १.00बजे वहा से निकले और १.३०को लाल किला पहुंच गए। वह पूरा लाल पत्थरों से बना हुआ था और वहा पर तस्वीर खींचकर हम निकल गए जामा

मस्जिद की और जहा तक पहुंचने में हमें रिक्शा करनी पडी और यह सफर काफी बुरा रहा। होली होने के कारण वहा की गलियों में पानी के गुब्बारों से हमारा स्वागत हुआ जो मुझे बिल्कुल अच्छा नही लगा। यह जानबूझकर किया गया था और हममें से कुछ इसके चलते काफी भीग चुके थे और पूरे दिन गिले कपडों में काफी दिक्कत भी होने लगी थी। मस्जिद में

जाकर वहा के परिसर का निरिक्षण कर हम बाहर निकले और वापस रिक्शा से ही बस तक चले गए। इसके बाद हमने दिल्ली सरोजनी मार्केट में भी काफी खरीदारी की। वैसे तो यह काफी प्रसिद्ध है किंतु मुझे उतना पसंद नहीं आया,किंतु फिर भी हमने वहा

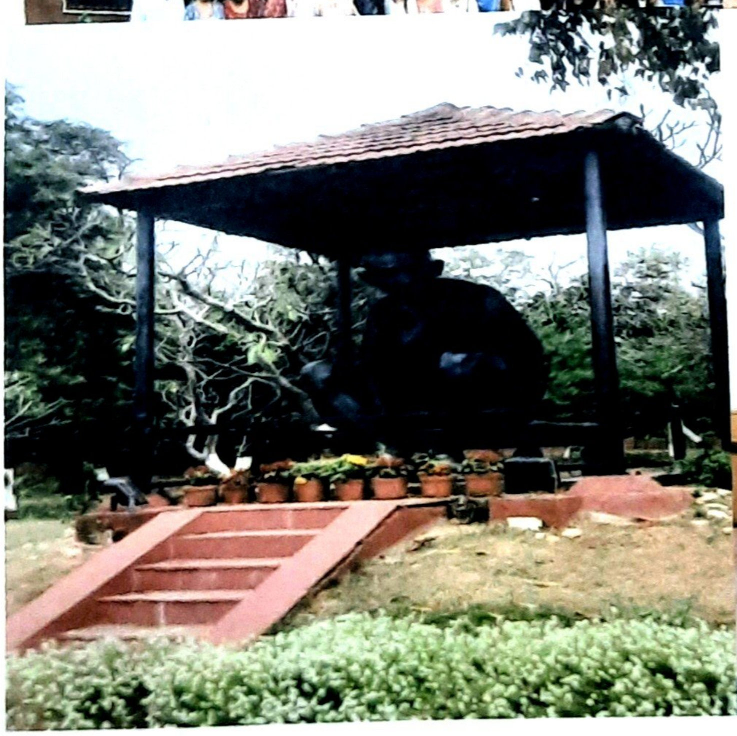

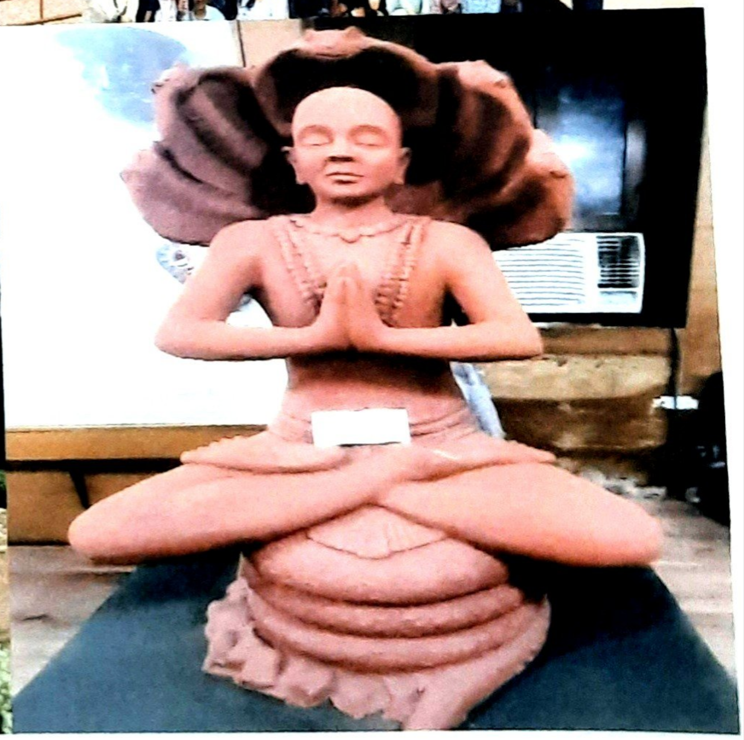

जमकर खरीदारी की जिसमें हमें काफी रात हो चुकी थी। इसके बाद हम सब बस में बैठकर वापिस होटल निकल गए।

२५ मार्च को पूरी रात हमे नींद ही नहीं आ रहीं थी। हम सब जल्दी से नहा धोकर तयार होकर सुबह के ३.३० बजे होटल से स्टेशन के लिए गाडी में बैठकर निकल पडे। ३.४० के आसपास हम स्टेशन पहुंच गए और सारा समान लेकर जल्दी से अंदर दौड़ पडे। हमे काफी देर हो चुकी थी और ट्रेन का समय भी होने ही वाला था अतः सारा समान लेकर जल्दी जल्दी में हम सब ने ट्रेन पकड ली । लेकीन इन सब भाग दौड में भारी समान संभालने के चक्कर में हम काफी बेहाल हो गए थे। हम सब ट्रेन में बैठ गए थे और हमारा घर वापसी का सफर शुरू हो चुका था। इतने दिनों तक घर से दूर रहने के कारण और बाहर के खाने, वातावरण एवं प्रदूषण से तंग आकर वापस घर जाने के लिए मैं काफी लालायित थी।

ट्रेन में बैठते ही हमारे मन को कुछ राहत मिली। अगले दिन सुबह १०बजे मेरी नींद खुली और हम सब घर पहुंचने के इंतजार में थे पर अभी २४घंटो का सफर बाकी था। सुबह चाय नाश्ता कर हम सब खेलते गाते हुए समय काटने लगे और इसके कारण हमारी दोस्ती भी गहरी हो गई। जो पहले एकदूसरे से बात भी नहीं कर पाते थे वही अब हम सब काफी घुलमिल चुके थे । गुरूजनों को भी जानने का और घुलमिलने का अवसर हमें मिला । सफर का असली मजा तो अभी शुरू ही हुआ था कि हम सबका अब एकदूसरे को अलविदा कहने का समय आ चुका था। अगले दिन २६मार्च को मैं स्टेशन पर उतरने को तयार थी।सुबह १० बजे करमली स्टेशन पर उतरते ही यह सुहाना सफर समाप्त हो गया।

दिल्ली को जहा हमने अबतक सिर्फ टीवी पर देखा था,किताबों में उसकी सुंदरता,प्रसिद्धि तथा उसके समृद्धी की तारीफ सुनी थी और साथ ही वहा के लोगों ,रहन सहन की अफवाह जो किसी को भी डरा दे या उसके स्वादिष्ट पकवानों को देख कर मुह में पानी आ जाया करता था आदि सबकुछ हमें वहा जाकर साक्षात अनुभव करने का भी इस यात्रा के जरिए अच्छा मौका मिल गया। साथ ही वहा की संस्कृती को जानने और इतिहास को फिर से जीने का भी अवसर प्राप्त हो गया। न केवल इतिहास के कारण यह समृद्ध है बल्कि आधुनिकीकरण तथा औद्योगिक विकास भी यहा काफी तेजी से होता हुआ देखा जा सकता हैं।

दिल्ली राजधानी होने के नाते केंद्र सरकार की तीनों इकाइयों- कार्यपालिका, संसद और न्यायपालिका के मुख्यालय नई दिल्ली और दिल्ली में स्थापित हैं।यहाँ बोली जाने वाली मुख्य भाषाएँ हैं : हिन्दी, पंजाबी, उर्दू और अंग्रेज़ी। भारत में दिल्ली का ऐतिहासिक और भौगोलिक महत्त्व है। इसके दक्षिण पश्चिम में अरावली पहाड़ियाँ और पूर्व में यमुना नदी है, जिसके किनारे यह नगर बसा हुआ है। यह प्राचीन समय में गंगा के मैदान से होकर जाने वाले वाणिज्य पथों के रास्ते में पड़ने वाला मुख्य पड़ाव था।यहाँ कई प्राचीन एवं मध्यकालीन इमारतों तथा उनके अवशेषों को देखा जा सकता हैं। पुरातात्विक दृष्टि से पुराना किला, जंतर मंतर, क़ुतुब मीनार और लौह स्तंभ जैसे अनेक विश्व प्रसिद्ध निर्माण यहाँ पर आकर्षण का केन्द्र समझे जाते हैं। एक ओर हुमायूँ का मकबरा, लाल किला जैसे विश्व धरोहर मुगल शैली की तथा पुराना किला, सफदरजंग का मकबरा, लोधी मकबरे परिसर आदि ऐतिहासिक राजसी इमारत यहाँ है तो दूसरी ओर निज़ामुद्दीन औलिया की पारलौकिक दरगाह भी। लगभग सभी धर्मों के प्रसिद्ध धार्मिक स्थल यहाँ हैं जैसे बिरला मंदिर, बंगला साहब गुरुद्वारा, बहाई मंदिर, अक्षर धाम मंदिर, और जामा मस्जिद देश के शहीदों का स्मारक इंडिया गेट, राजपथ पर इसी शहर में निर्मित किया गया है। भारत के प्रधान मंत्रियों की समाधियाँ हैं, जंतर मंतर है, लाल किला है साथ ही अनेक प्रकार के संग्रहालय और अनेक बाज़ार हैं, जैसे , चाँदनी

चौक और बहुत से रमणीक उद्यान भी हैं, जैसे मुगल उद्यान, चिड़ियाघर, आदि, जो दिल्ली घूमने आने वालों का दिल लुभा लेते हैं।दिल्ली भारत में शिक्षा का एक महत्त्वपूर्ण केन्द्र है। दिल्ली के विकास के साथ-साथ यहाँ शिक्षा का भी तेजी से विकास हुआ है। यहाँ की शिक्षा संस्थाओं में विद्यार्थी भारत के सभी भागों से आते हैं। यहाँ कई सरकारी एवं निजी शिक्षा संस्थान हैं जो कला, वाणिज्य, विज्ञान, प्रोद्योगिकी, आयुर्विज्ञान, विधि और प्रबंधन में उच्च स्तर की शिक्षा देने के लिए विख्यात हैं। उच्च शिक्षा के संस्थानों सबसे महत्त्वपूर्ण है जिसके अन्तर्गत कई कॉलेज एवं शोध संस्थान हैं। दिल्ली शहर में बने स्मारकों से विदित होता है कि यहां की संस्कृति प्राच्य ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि से प्रभावित है। भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण विभाग ने दिल्ली शहर में लगभग १२०० धरोहर स्थल घोषित किए हैं, जो कि विश्व में किसी भी शहर से कहीं अधिक है। और इनमें से १७५ स्थल राष्ट्रीय धरोहर स्थल घोषित किए हैं। पुराना शहर वह स्थान है, जहां मुगलों और तुर्क शासकों ने स्थापत्य के कई नमूने खड़े किए, जैसे जामा मस्जिद (भारत की सबसे बड़ी मस्जिद) और लाल किला। दिल्ली में फिल्हाल तीन विश्व धरोहर स्थल हैं – लाल किला, कुतुब मीनार और हुमायुं का मकबरा। अन्य स्मारकों में इंडिया गेट, जंतर मंतर , पुराना किला ,बिरला मंदिर, अक्षरधाम मंदिर और कमल मंदिर आधुनिक स्थापत्यकला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। राज घाट में राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी तथा निकट ही अन्य बड़े व्यक्तियों की समाधियां हैं। नई दिल्ली में बहुत से सरकारी कार्यालय, सरकारी आवास, तथा ब्रिटिश काल के अवशेष और इमारतें हैं। कुछ अत्यंत महत्त्वपूर्ण इमारतों में राष्ट्रपति भवन, केन्द्रीय सचिवालय, राजपथ, संसद भवन और विजय चौक आते हैं। नई दिल्ली में गुप्तकाल में निर्मित लौहस्तंभ है। यह प्रौद्योगिकी का एक अनुठा उदाहरण है। ईसा की चौथी शताब्दी में जब इसका निर्माण हुआ तब से आज तक इस पर जंग नहीं लगा। दिल्ली में इंडो-इस्लामी स्थापत्य का विकाश विशेष रूप से दृष्टगत होता है। दिल्ली के कुतुब परिसर में सबसे भव्य स्थापत्य कुतुब मिनार है। इस मिनार को सूफ़ी संत

कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की स्मृति में बनवाया गया था। तुगलक काल में निर्मित गयासुद्दीन का मकबरा स्थापत्य में एक नई प्रवृत्ति का सूचक है। दिल्ली में हुमायूँ का मकबरा मुगल स्थापत्य कला का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। शाहजहाँ का शासनकाल स्थापत्य कला के लिए याद किया जाता है।दिल्ली के सार्वजनिक यातायात के साधन मुख्यतः बस, ऑटोरिक्शा और मेट्रो रेल सेवा हैं। दिल्ली अपने आप में काफी समृद्ध राज्य है। यह सफर सही में यादगार रहा।